International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 09-11-2025, Accepted: 08-12-2025, Published: 23-12-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 82-84

कन्नड़ साहित्य में श्री राम

डॉ. सैयद मुईन
सहायक प्राध्यापक, कन्नड़ विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं भाषाएँ विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, क्रिस्तु जयन्ती मनित विश्वविद्यालय के. नारायणपुरा, बैंगलोर, कर्नाटक, भारत

सारांश
भारतीय साहित्य की परंपरा में भगवान श्री राम केवल धार्मिक पुरुष नहीं, बल्कि आदर्श मानव (मर्यादा पुरुषोत्तम) के रूप में प्रतिष्ठित हैं। जिस प्रकार संस्कृत, हिंदी, तमिल और तेलुगु साहित्य में रामकथा का गहरा प्रभाव है, उसी प्रकार कन्नड़ साहित्य में भी श्री राम की गाथा, मर्यादा और आदर्शों का अनूठा स्थान है। कन्नड़ कवियों ने राम को केवल देवता के रूप में नहीं, बल्कि मानवता, सत्य और धर्म के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है।

मूल शब्दः कन्नड़ साहित्य, श्री राम, रामकथा, रामायण दर्शनम, कुवेम्पु, मध्यकालीन कन्नड़ साहित्य, नागचंद्र

प्रस्तावना

कन्नड़ साहित्य में रामकथा का प्रारंभ

कन्नड़ में रामकथा की परंपरा बहुत प्राचीन है। सबसे पहले 10–12वीं शताब्दी में पुरंदरदास, पद्मनाभ, और नागचंद्र जैसे कवियों ने राम के चरित्र पर काव्य रचे। इनमें से सबसे प्रमुख कृति है— "पंप रामायण" जिसे कवि नागचंद्र ने 12वीं शताब्दी में रचा था। पंप ने राम को केवल विष्णु का अवतार नहीं, बल्कि नैतिक आदर्श और वीरता के प्रतीक के रूप में चित्रित किया। उनका राम न्यायप्रिय, दृढ़निश्चयी और मानवीय गुणों से युक्त नायक है।

पंप रामायण और उसका साहित्यिक महत्व

"पंप रामायण" कन्नड़ का पहला महाकाव्य माना जाता है। इसमें कवि ने वाल्मीकि रामायण से प्रेरणा लेकर उसे कन्नड़ लोकजीवन और सांस्कृतिक चेतना से जोड़ा। कवि नागचंद्र ने राम को एक "धर्मयोद्धा" के रूप में प्रस्तुत किया— जो अन्याय, अधर्म और अहंकार के विरुद्ध संघर्ष करता है। उन्होंने राम के जीवन को केवल धार्मिक कथा नहीं, बल्कि मानव संघर्ष की प्रेरणा बताया। कवि नागचंद्र के अनुसार– "राम वह है जो धर्म के लिए स्वयं को भी त्याग दे।"

मध्यकालीन कन्नड़ कवियों में रामकथा

मध्यकालीन कन्नड़ साहित्य में कुमुदेंदु, नरहरि, कुमारव्यास, और नागचंद्र जैसे कवियों ने रामकथा के विविध रूप प्रस्तुत किए।

- कुमारव्यास ने "कुमारव्यास भारत" की भाँति "रामकथा" पर भी उपाख्यानात्मक कविताएँ लिखीं।
- नागचंद्र ने राम को जैन दृष्टि से चित्रित किया — जहाँ राम हिंसा से दूर, अहिंसा और करुणा का प्रतिरूप हैं।

जैन कवियों ने राम को अहिंसक, संयमी और तपस्वी नायक के रूप में प्रस्तुत किया। उनके लिए राम केवल योद्धा नहीं, बल्कि मोक्षमार्ग का अनुयायी है।

ईसा पूर्व 7वीं शताब्दी के बाद से भारतीय संस्कृति में श्री राम का सर्वोच्च स्थान है। माना जाता है कि वे ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में रहते थे। राम का जन्म भारत के कोसल में दशरथ के पुत्र के रूप में हुआ था। वे हिंदू धर्म में भगवान विष्णु के सातवें अवतार हैं। भारतीय संस्कृति में राम का विशेष स्थान है। भारत के अलावा नेपाल, इंडोनेशिया और तिब्बत में भी भगवान राम की पूजा की जाती है। राम एक आदर्श व्यक्ति, गरिमापूर्ण व्यक्ति, पवित्र पिता, लोगों के व्यक्ति और निस्वार्थ हृदय के व्यक्ति हैं।

राम के बारे में कई किंवदंतियां जैन और बौद्ध ग्रंथों में भी पाई जाती हैं। जैन ग्रंथों में छत्तीस सलाकों में से आठवें बलभद्र के रूप में राम का उल्लेख है। श्री विजय की कवि राजमार्ग, कन्नड़ में पहली उपलब्ध कृति, रामायण के एक श्लोक का उल्लेख करती है। सबसे मूल्यवान कृति रामचंद्रपुराण है, जो नागचंद्र की जैन रामायण है, जो बारहवीं शताब्दी की शुरुआत में अभिनव पम्पा के रूप में प्रसिद्ध है। इस कृति में कवि ने अपने लाभ के लिए पात्रों को चित्रित किया है। कन्नड़ साहित्य के एक महान कवि कुमारव्यास कर्नाट, जो मुख्य रूप से 14वीं और 15वीं शताब्दी में रहते थे, ने भारत कथामंजरी में रामायण का संक्षिप्त रूप से वर्णन किया हैः "भारत के इतने सारे कवियुने रामायण लिखा है के विष्णु के आदिशेष रामायण लिखने वाले कई कवियों का बोझ उठाने के लिए संघर्ष कर रहा है। श्री राम के इतिहास में कदम रखने के लिए भी कोई जगह नहीं है।" अर्थात, कई कवियों ने रामायण को एक काव्य वस्तु के रूप में बनाया है, और कविता का भार काफी हद तक आदिशेष द्वारा वहन किया जा रहा है। रामायण वैसा नहीं है। भारतीय संस्कृति में 300 से अधिक रामायण हैं। रमन ने कहा। वाल्मीकि की रामायण को पहली बार कन्नड़ में लाने वाले 15वीं शताब्दी के कवि कुमार वाल्मीकि ने राम अवतार के महत्व और राम के भक्ति गीतों को एक अनूठे तरीके से फैलाने के उद्देश्य से कुमारव्यास भारत से प्रेरित 'गदुगिन नारायणप्पा' की अनुसार करके रचना की।

उन्होंने सुंदर कविताएँ लिखीं। 'तोरवे रामायण' में 5079 श्लोकों में 112 संधीगा "अलंकारों" की रचना की है। इस कविता का सबसे बड़ा गुण कविता के बजाय भक्ति है। इस कविता में कुमारव्यस भारत के लेखक कुमारव्यास और संस्कृत के आदिकवि कालिदास का प्रभाव स्पष्ट है। तोरावे ने बहुत खूबसूरती से चित्रित किया है कि रामायण के सभी पात्र गुरु राम के हाथों में हैं जैसा वे चाहते हैं।

भक्तिकालीन कन्नड़ साहित्य में श्री राम

भक्तिकाल में कर्नाटक के हरिदास आंदोलन ने रामभक्ति को नया स्वर दिया। पुरंदरदास, कनकदास, विजयदास जैसे कवियों ने राम को भक्ति, करुणा और उद्धार के देवता के रूप में चित्रित किया। पुरंदरदास के भजन "राम नाम तव मीठा लगे" जैसे भक्ति–भाव से ओतप्रोत हैं। उनके लिए राम केवल ईश्वर नहीं,

बल्कि प्रेम और विश्वास का रूप हैं। पुरंदरदास कहते हैं — "राम नाम जपने से ही हृदय का अंधकार मिटता है।"

कन्नड़ के मध्यकालीन साहित्य के अन्त्य कवी और आधुनिक कन्नड़ साहित्य के उदय से पहले वाले कवी 'मुद्दन्ना' 'श्री राम' पर 3 प्राचीन ग्रन्थ लिखी हैं। मुद्दन्ना ने 'अद्भुत रामायण' में राम के बारे में सबसे सुंदर कहानियाँ सुनाई हैं– 'श्री रामपट्टाभिषेक' और 'श्री रामश्वमेध'। मुद्दन्ना – मनोरमा का एक सुंदर वर्णन है, विशेष रूप से 'श्री रामास्वमेध' के काम में। बरसात के मौसम का वर्णन लगातार बारिश के कारण, मनोरमा, जो घर पर ऊब गई थी, अपने पति के आने का इंतजार कर रही थी, अपने पति के आने के बाद बेहद प्यार से व्यवहार कर रही थी, अपने प्रिय पति से बात कर रही थी, उसे एक सुंदर कहानी बताने के लिए कह रही थी। जब मुद्दन्ना ने पूछा कि कौन सी कहानी सुनानी है, तो उन्होंने कहा, "मुझे राम की कुछ सुंदर कहानी बताओ।" सुनने में बहुत अच्छा लगता है।

आधुनिक कन्नड़ साहित्य में राम का स्वरूप

आधुनिक कन्नड़ कवियों और लेखकों ने रामकथा को मानव मूल्य और समाज सुधार के प्रतीक के रूप में पुनर्परिभाषित किया।

- कुवेम्पु ने अपनी प्रसिद्ध कृति "रामायण दर्शनम" में रामकथा को दार्शनिक और मानवतावादी दृष्टि से प्रस्तुत किया।
- यह कृति आधुनिक कन्नड़ साहित्य की महानतम रचना मानी जाती है।

कुवेम्पु के लिए राम "सत्य और धर्म का अनंत रूप" हैं– वे मर्यादा से आगे जाकर विश्वबंधुत्व और मानवता के प्रतीक बनते हैं। कुवेम्पु लिखते हैं– "राम हर युग में जन्म लेते हैं, जहाँ सत्य संकट में हो।"

कुवेम्पु का 'रामायण दर्शनम' और उसका महत्व

कुवेम्पु का "रामायण दर्शनम" केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मानव चेतना की दार्शनिक व्याख्या है। उन्होंने वाल्मीकि की कथा को आधुनिक दृष्टि से व्याख्यायित किया— राम यहाँ अहंकार और अधर्म के विरुद्ध चेतना की आवाज़ बनते हैं। इस रचना को कुवेम्पु ने "मानवता का महाकाव्य" कहा। यह कृति उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार (1967) दिलाने वाली प्रमुख रचना बनी।

कुवेम्पु की 'श्री रामायण दर्शनम' कन्नड़ साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण महाकाव्य ग्रन्थ में से एक है, विशेष रूप से बीसवीं शताब्दी में। जब होसगंद साहित्य के युग में महाकाव्यों का युग समाप्त हो गया था, तब कुवेम्पु द्वारा रचित आधुनिक साहित्य श्री रामायानदर्शनम का लोकोत्सरा कार्य इस बात का एक चमकता हुआ उदाहरण है कि नए युग के धर्म को आत्मसात करके पुरानी कहानी कैसे नई बन सकती है। "दुनिया के महानतम कवि, जॉन मिल्टन ने" "ए पैराडाइज लॉस्ट" "लिखा था।

ऐसे समय में कुवेम्पु का महाकाव्य दुनिया की सबसे बड़ी कृति प्रतीत होती है। जब डी. जवारेगौड़ा ने राष्ट्रीय कवि के साथ साक्षात्कार कार्यक्रम में 'श्री रामायण दर्शनम' पर कुवेम्पु को एक लंबा साक्षात्कार दिया, तो यह कविता थी जिसे बीसवीं शताब्दी के आधुनिक साहित्य की नई लहर के लिए सबसे अधिक अनुकूलित किया गया था। ऐसी स्थिति में, जब अधिकांश कवियों को गीतों, कहानियों, लघु कथाओं, उपन्यासों, आलोचनाओं आदि में अधिक रुचि दिखाई देती है। जिसे पश्चिम के प्रभाव में बहुत कम समय में पढ़ा जा सकता है, तो आपने महाकाव्य 'रामायण दर्शनम' क्यों लिखा? दुनिया के सबसे बड़े आलोचक A.C. ब्रैडली ने कहा, 'महाकाव्यों का युग समाप्त हो गया है। केवल दफन शेष है।' इस बारे में उनकी क्या राय है? ये सवाल जवारेगौड़ा पूछ रहे हैं। इस तरह कुवेम्पु कहते हैं।

"मेरे अपने विचार हैं। मेरी अपनी भावनाएँ और अनुभव हैं। आखिरकार, वह खोज रहा है कि उसे क्या मिल सकता है। यह खोज कहाँ समाप्त हुई, हजारों वर्षों से भारतीय संस्कृति को आत्मसात करने वाले गाँव में हर कोई रामायण की कहानी को अच्छी तरह से जानता है। रामायण के पात्र ज्ञात हैं, वहाँ के कई पात्र वर्तमान परिस्थितियों में अपने नाम रख रहे हैं। इसलिए, मुझे एहसास हुआ कि कविता के माध्यम से भारतीय संस्कृति, इसकी विरासत और संस्कृति के सार को व्यक्त करने के लिए रामायण सबसे बड़ी चीज है। इस प्रकार रामायण लिखी गई थी। सामान्य तौर पर, उनकी प्रतिभा की तीन विशेषताएँ हैं, जिनमें से एक प्रकृति का प्रेम है। राम का यथासंभव वर्णन करने के लिए दो तर्कसंगतताएँ, तीन आध्यात्मिकताएँ, इन सभी को अलग–अलग संदर्भों में कविता में शामिल किया गया है। इस प्रकार कुवेम्पु के महाकाव्य रामायण को समझने के लिए, सर्वोदय. समन्वय और पूर्ण दृष्टि होनी चाहिए। इस पुस्तक में चार भाग और पाँच अध्याय हैं। शुरुआत में कुवेम्पु वाल्मीकि, गदग के नारायणप्पा आदि को याद करते हैं। इस तरह भारतीय संस्कृति में 'श्री रामायण दर्शनम' के कार्य में सबसे बड़ा स्थान पाया जा सकता है। वे भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार ज्ञानपीठ पुरस्कार के प्राप्तकर्ता हैं।

कन्नड़ लोककथाओं और नाटकों में रामकथा

कन्नड़ लोककला और नाट्य परंपरा— यक्षगान, दशावतार, हरीकटे — में रामकथा का महत्वपूर्ण स्थान है। लोक कलाकारों ने राम को जन–जीवन के नायक के रूप में प्रस्तुत किया। यक्षगान में राम के आदर्श और रावण की अहंकार पूर्ण त्रासदी के माध्यम से नैतिकता की शिक्षा दी जाती है।

दार्शनिक और नैतिक पक्ष

कन्नड़ साहित्य में राम का स्वरूप केवल धार्मिक नहीं, बल्कि दार्शनिक और नैतिक चेतना का प्रतीक है। राम धर्म, सत्य, त्याग और प्रेम के प्रतीक हैं। उनकी कथा प्रत्येक युग में नैतिक पुनर्निर्माण की प्रेरणा देती है।

इनके अलावा श्री रामकृष्ण परमहंस, श्री रामकृष्ण परमहंस और श्री वेंकटेश्वर राव भी उपस्थित थे। श्री वेंकटेश्वर राव, श्री। सीतारामय्या द्वारा वाल्मीकि रामायण। वीरप्पा मोइली की श्री राम मोहनवेशम कन्नड़ साहित्य की महानतम कृतियों में से एक है। उनके लगभग सभी कार्यों में, राम का आदर्श व्यक्तित्व, उदारता, दूरदर्शिता, निष्पक्षता, निस्वार्थ सोच आदि उत्कृष्ट गुणों से संपन्न हैं। आई. कुल मिलाकर, रामायण की कल्पना उच्चतम दर्शन द्वारा की गई है जिसे मानव जाति कभी भी समझ सकती है। रामायण के मुख्य लक्ष्यों में से एक धर्म के आधार पर जीवन की श्रेष्ठता पर जोर देना है, जो अस्तित्व के दिव्य नियम का आधार है। श्री राम आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति और सबसे बढ़कर आदर्श राजा का प्रतिनिधित्व करते हैं। रामायण के कार्यों में भक्ति–योग और कर्म और ज्ञान का संयोजन है। व्यक्ति के सामाजिक जीवन पर जोर दिया जाता है। ईश्वर की कृपा के बिना कोई भी व्यक्ति या समाज प्रगति नहीं कर सकता है। श्री राम की सरकार आदर्श शासन का मॉडल है। रामायण के नायक राम ऐसे ही चतुर शासक हैं। वास्तव में, रामायण में प्रस्तुत एक आदर्श राज्य की दृष्टि प्राचीन काल से लेकर आज तक भारतीय राजनीतिक विचार का एक महत्वपूर्ण पहलू रही है, जिसमें समकालीन राजनीतिक विचारक महात्मा गांधी ने एक आदर्श राज्य की अपनी अवधारणा के लिए राम राज्य शब्द गढ़ा है। रामायण में राजत्व का दावा अंततः मानवतावादी स्थितियों पर आधारित है।

निष्कर्ष

कन्नड़ साहित्य में श्री राम धर्म, न्याय और करुणा के प्रतीक हैं। कवि पंप ने जहाँ राम को मानव नायक बनाया, वहीं कुवेम्पु ने उन्हें विश्व मानवता का दार्शनिक प्रतीक बना दिया। इस प्रकार, कन्नड़ साहित्य में राम – आदर्श, संघर्ष और चेतना की अमर गाथा हैं। कन्नड़ साहित्य में भगवान श्री राम का स्वरूप बहुआयामी है–वे कभी योद्धा हैं, कभी भक्त के आराध्य, कभी दार्शनिक आदर्श। पंप से लेकर कुवेम्पु तक, हर युग ने रामकथा को अपने समय की सामाजिक और नैतिक आवश्यकताओं के अनुरूप व्याख्यायित किया है। कन्नड़ कवियों ने यह सिद्ध किया कि — "राम केवल अयोध्या के नहीं, समस्त मानवता के नायक हैं।" इस प्रकार, कन्नड़ साहित्य में श्री राम की उपस्थिति धर्म से परे जाकर मानवता और सत्य की शाश्वत ज्योति के रूप में विद्यमान है।

संदर्भ

1. कुमारव्यस्थ का आदि पर्व
2. कुवेम्पु. रामायण दर्शनम. मैसूर विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1961.
3. कुमार वाल्मीकि की रामायण
4. डॉ. बैरामंगला रामेगौड़ा के विशेष व्याख्याता– कन्नड़ साहित्य अकादमी, बैंगलोर
5. पंप. पंप रामायण (कन्नड़ महाकाव्य, 10वीं शताब्दी).
6. पुरंदरदास. दास पदा संग्रह, 16वीं शताब्दी.
7. HS Shivaprakash, Kannada Epic Tradition, Bangalore University, 2005.
8. K Krishnamurthy. Kuvempu and the Vision of Universal Man, 1970.